संगीत बदलता स्वरूप : फ्यूजन
(वाद्य–वादन की विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. ऋतु शर्मा
संगीत विभागाध्यक्ष, महर्षि दयानन्द महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान

सार–संदर्भ

फ्यूजन अर्थात मिश्रण, सम्मिश्रण, समेकन, एकीकरण इत्यादि, अर्थात् जब दो या अनेक भिन्न प्रवृति की विधाएँ एक साथ, एक मंच पर प्रस्तुत की जाए तो वह फ्यूजन कहलाती हैं। भिन्न प्रवृति की विधाएँ, राग अथवा ताल रूपी माला में इस प्रकार गूँथी जाती हैं कि एक सूत्र में बँधने के बाद भी वे अपने स्वतंत्र अस्तित्व व अपनी शैली को नहीं छोड़ते अर्थात् विधाओं का सम्मिश्रण इस प्रकार होता है कि वे अपने गायन, वादन के गुण धर्म को कायम रखते हैं। फ्यूजन की उत्पत्ति के विषय में यह कहा जा सकता है कि प्राचीन ''तिरोभाव–आविर्भाव'' की क्रिया ने सम्भवतः मिश्रण अथवा फ्यूजन की विधा को जन्म दिया होगा।वर्तमान में फ्यूजन अपने चरम प्रकाष्ठा पर है। आज वाद्यों की अलग–अलग श्रेणी (तत्, घन, सुषिर, अवनद्य) में, भारतीय व पाश्चात्य वाद्यों में, उत्तरी भारतीय व दक्षिण भारतीय लोक वाद्यों आदि में मिश्रण कर फ्यूजन किया जा रहा है। वर्तमान में पाश्चात्य कलाओं एवं उनकी शैली को भारतीयों ने फ्यूजन के माध्यम से इस प्रकार अपना लिया है कि अब उन्हे ''फ्यूजन बैण्ड'' के नाम से जाना जाने लगा है। फ्यूजन ने संगीत को एक नई दिशा में मोड़ने का प्रयास किया है।
कुंजी शब्द : फ्यूजन, वाद्य वादन, संगीत मिश्रण।

लेटिन भाषा के ''फाऊन्डर'' ;विनदकमतद्ध शब्द से ''फ्यूजियो'' और ''फ्यूजियो'' शब्द से ''फ्यूजन'' शब्द बना है। फाऊन्डर का अंग्रेजी अर्थ ''डमसज'' है। हिन्दी अनुवाद से उमसज का स्टीक अर्थ हुआ ''मिश्रण करना''। अतः फ्यूजन, सम्मिश्रण, समेकन, मिश्रण, एकीकरण इत्यादि का घोतक है।

फ्यूजन में भिन्न–भिन्न प्रवृति की विधाएं राग अथवा ताल रूपी माला में इस प्रकार गूंथी जाती हैं कि एक सूत्र में होने के बावजूद भी वो अपने स्वतंत्र अस्तित्व व अपनी शैली को नहीं छोड़ती अर्थात् विधाओं का सम्मिश्रण इस प्रकार होता है कि वे अपने गायन अथवा वादन के गुण धर्म को कायम रखती है जैसे कि – तबला उत्तर भारतीय वाद्य है और उसमें बंद बोलों का प्रयोग होता है तथा पखावज में खुले बोलों का प्रयोग होता है। जब ये एक साथ बजेंगे तो मृदंग वादक अपने मृदंग पर मृदंग के खुले बोल ही बजाएगा और तबला वादक अपनी परम्परा को निभाएगा।

फ्यूजन कोई आज की देन नहीं है। इसका इतिहास बहुत पुराना है। भरत मुनि के 'नाट्य शास्त्र' में इसे 'कुतुप' संज्ञा दी गई थी। कालान्तर में इसे वाद्यवृन्द व वृन्दगान से जाना जाने लगा और वही संभावितः आज फ्यूजन के नाम से प्रचलित है। भरत मुनि ने तीन प्रकार के कुतुप का वर्णन किया है।

उत्तम वृन्द

इसमें चार प्रमुख गायक, 8 सहगायक, 12 गायिकाएं, 4 बंसी वादक और 4 मृदंग वादक होते हैं।

मध्यम वृन्द

इसमें 2 मुख्य गायक, 4 सहगायक, 6 गायिकाएं, 2 बंसी वादक व 2 मृदंक वादक होते हैं।

कनिष्ठ वृन्द

इसमें एक मुख्य गायक 2 सहगायक, 3 गायिकाएं, 1 बंसी वादक व 1 मृदंग वादक होते हैं।

भरत मुनि ने कुतप में गायक–वादक की जो संख्या निर्धारित की थी, वे हर युग में बदलती गई। वर्तमान में कुतुप अथवा वृन्द अस्तित्व में तो अवश्य हैं, किन्तु अलग–अलग प्रकार से परिवर्तित एवं मिश्रित होते–होते उसका नाम व स्वरूप बदल चुका है। 5वीं सदी के कुतुप का पुनः मिश्रित रूप वर्तमान में बैण्ड, आर्केस्ट्रा तथा फ्यूजन के नाम से समाज में प्रसिद्धि पा रहा है। फ्यूजन कर्त्ता भिन्न विधाओं को जोड़ने में लगे हैं ओर यह, बदला हुआ फ्यूजन हमारी संगीत को एक नई दिशा में ले जा रहा हैं, उसे समृद्ध कर रहा है। वर्तमान में फ्यूजन कई प्रकार से हो रहे हैं–

वाद्यों का फ्यूजन

वाद्य चाहे किसी भी देश के हों उनको मुख्य चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

तत्/तन्तु वाद्यः– ऐसे वाद्य जिनमें स्वरों की उत्पति तारों से होती है। जैसे कि–सितार, वीणा, तानपुरा, सारंगी इत्यादि।

सुषिर वाद्यः– फूँक अथवा हवा से बजने वाले वाद्य सुषिर वाद्य की श्रेणी में आते हैं। जैसे कि–बाँसुरी, शहनाई आदि।

अवनद्ध वाद्यः– ऐसे ताल वाद्य जिनका मुह चमड़े से ढ़का हो, अवनद्ध वाद्य कहलाता है। जैसे कि–तबला, मृदंग आदि।

घन वाद्यः– वे वाद्य जिनमें स्वर की उत्पति चोट अथवा आघात करने से हो वे घन वाद्यों की श्रेणी में आते हैं। जैसे कि–जल तरंग, मंजीरा आदि।

वर्तमान में इन चारों ही प्रकार के वाद्यों पर फ्यूजन हो रहे हैं। कभी एक ही श्रेणी के वाद्य, किन्तु भिन्न देश के वाद्यों में फ्यूजन होते हैं तो कभी एक ही देश के वाद्य होते है किन्तु उनकी श्रेणियां भिन्न होती हैं। कई बार फ्यूजनकर्ता भिन्न देश व भिन्न श्रेणी के वाद्यों का सम्मिश्रण कर फ्यूजन करते हैं। इस प्रकार दो देशों का, दो श्रेणियों का, दो शैलियों का मिश्रण कर फ्यूजन बनाये जा रहे है।

हिन्दुस्तानी व कर्नाटक शास्त्रीय संगीत के घन वाद्यों का फ्यूजन

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत व कर्नाटक शास्त्रीय संगीत दो भिन शैलियां है। अतः इनके वाद्यों के आकार, प्रकार व बजाने के ढंग भी अलग–अलग होते हैं। वर्तमान में इन दोनों शैलियों को मिलाकर काफी फ्यूजन हो रहे हैं।

''सन् 2002 में टोरन्टो में कर्नाटक के विख्यात मृदंग वादक 'त्रिची शंकरण', तथा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के ख्याति प्राप्त तबला वादक ''अनिन्दो चटर्जी'' ने 16 मात्राओं की ताल पर फ्यूजन किया।''[1] कर्नाटक शास्त्रीय संगीत में 16 मात्रा की इस ताल को ''आदि ताल'' कहते हैं तथा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में इसी ताल को ''त्रिताल'' के नाम से जाना जाता है। इस फ्यूजन में जिन वाद्यों का प्रयोग किया गया वे दोनों ही अवनद्ध वाद्यों की श्रेणी में आते है किन्तु शैली भिन्न होने के कारण दोनों को बजाने के ढंग व इनके बालों में काफी भिन्नता होती है। मृदंग के बोल खुले होते हैं तथा तबले पर बंद बोल बजाए जाते हैं किन्तु ताल व वाद्यों की श्रेणी एक होने के कारण इनका फ्यूजन उत्कृष्ट श्रेणी का था।

हिन्दुस्तानी व कर्नाटक शास्त्रीय संगीत के घन वाद्यों का फ्यूजन

दोनों कलाकारों ने फ्यूजन के शुरूआत में अपने वाद्यों को बारी–बारी से अपनी शैली में कुछ आवर्तन तक बजाया। फिर दोनों कलाकारों ने एक–एक आवर्तन पर अपने वाद्य बजाने शुरू किया। इस प्रकार कुल चार अथवा पांच आवर्तन तक दोनों कलाकारों ने अपने–अपने वाद्य एक–दूसरे के आवर्तन खत्म होते ही बजाए। फिर दोनों कलाकारों ने 16 मात्राओं को आधा–आधा बाँट लिया अर्थात् पहली 8 मात्राओं पर मृदंग व बाद की 8 मात्राओं पर तबला बजाया गया। लेकिन दोनों ही हर बार इन तालों के बोलों में अपनी ही शैली में थोड़ा बदलाव करते थे। कुछ आवर्तन बाद दोनों विद्वानों ने चार–चार मात्राओं में बजाया अर्थात् पहली चार–चार मात्राओं पर मृदंग तो 5 से 8 वीं मात्रा तक तबला, फिर 9वीं से 12वीं मात्रा तक मृदंग और 13 वीं से 16वीं मात्रा तक फिर से तबले के बोल बजाए गये। कुछ आवर्तनों बाद दोनों ने मृदंग व तबले के माध्यम से सवाल जवाब किये। इस सवाल–जवाब में दोनों ने अपनी–अपनी शैली और परम्परा को बनाए रखा। सवाल–जवाब के माध्यम से दोनों ने इस फ्यूजन को प्रकाष्ठा तक पहुंचाकर एक दम एक ही मात्रा पर इस प्रयोग को समाप्त किया। इस फ्यूजन की विशेषता यह थी कि दोनों अलग–अलग विधा के होने के बाद भी एक रस हो गये थे। दोनों एक रंग होने के बाद भी अपनी–अपनी परम्पराओं में रहे।

हिन्दुस्तानी तत् वाद्य व पाश्चात्य तत् वाद्यों का फ्यूजन

''ग्रैमी अवॉर्ड से सम्मानित पं. विश्वमोहन भटट् (मोहन वीणा वादक) तथा अमेरिका के महान संगीतज्ञ रे कूडर (स्लाईट गिटार वादक) ने सन् 1993 में ''Meeting by the rever'' अलबम बनाया है।''[2] दोनों वाद्यों की बनावट लगभग एक जैसे है तथा दोनों वाद्यों को बजाने का तरीका भी एक जैसा है। दोनों कलाकारों ने गिटार को परिष्कृत कर उसे शास्त्रीय संगीत में ढ़ाला है।

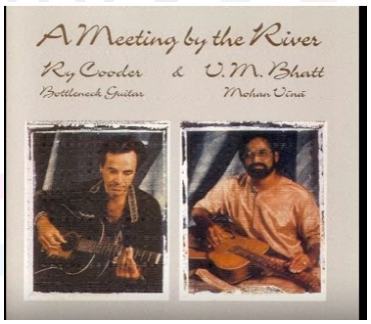

हिन्दुस्तानी तत् वाद्य व पाश्चात्य तत् वाद्यों का फ्यूजन

''दोनों ने ही ''डममजपदह इल जीम तमअमत'' अलबम में चार रागों को चुन कर उसमें फ्यूजन किया है। इस अलबम के सभी फ्यूजन इतने प्रसिद्ध हुए कि इस फ्यूजन अलबम को सन् 1994 में 36वां ग्रेमी अवार्ड से सम्मानित किया गया। इसी अलबम को अमेरिकी की ''बिलबोई पत्रिका'' ने ''टोप वर्ल्ड म्यूज़िक अलबम'' की श्रेणी में चौथे स्थान पर रखा।''

उत्तरी भारतीय व दक्षिणी भारतीय शास्त्रीय अवनद्ध सुषीर, तत्, धन वाद्यों का फ्यूजन –

बड़े समूह का फ्यूजन अपेक्षाकृत ज्यादा आकर्षक लगता है। वर्तमान में फ्यूजन बड़े समूहों में होने लगे। ''यक्षस ग्रुप ने 17 मई सन् 2013 को एक बहुत बड़े समूह ने साथ मिलकर–फ्यूजन किया।''[3] इस समूह में बाँसुरी (सुषिर वाद्य), सितार, वायलिन (तत् वाद्य), मृदंगम् व तबला (अवनद्ध वाद्य) तथा घटकम् (घन वाद्य) थे। इस समूह में ''श्री वी.वी. बालासाई'' (बाँसुरी वादक), ''श्री वी. सिवा राम कृष्णा'' (सितार

वादक), ''श्री रामकृष्ण'' (मृदंग व घटकम् वादक), ''श्री गणेश राव'' (तबला वादक) तथा ''कल्पना वैन्कट'' (वॉयलिन वादिका) ने भाग लिया था। इस समूह ने प्रयोग के लिए ''राग–जोग'' को लिया। राग–जोग उत्तर व कर्नाटक संगीत में संयुक्त रूप से गाई– बजाई जाती है।

उत्तरी भारतीय व दक्षिणी भारतीय शास्त्रीय अवनद्ध सुषीर, तत् धन वाद्यों का फ्यूजन

राग जोग की तरह बाँसुरी भी एक ऐसा वाद्य है जो उत्तर व कर्नाटक के शास्त्रीय संगीत का हिस्सा है अर्थात् दोनों शैलियों के प्रमुख वाद्यों में आता है। अतः बाँसुरी ने दोनो विधाओं को मिलाने का कार्य किया। इस प्रयोग में ''वॉयलिन'' व मृदंग एवं घटकम् दक्षिण भारतीय वाद्य एवं ''सितार'' और ''तबला'' उत्तर भारतीय वाद्य थे। शुरू में पूरे समूह ने एक साथ वाद्य बजाया फिर जब वॉयलिन बजता है तो उसकी संगत में मृदंग बजता और यदि केवल सितार बजता तो उसकी संगत के रूप में तबले का प्रयोग किया जाता। चूँकि वायलिन कर्नाटक संगीत का वाद्य इसलिए उसके साथ मदृंग व घटकम से संगत की गई और सितार उत्तर भारतीय वाद्य है अतः उसके साथ संगत के रूप तबला बजाया गया। किन्तु सितार अथवा वॉयलिन से किसी के साथ भी बाँसुरी बजती तब मृदंग एवं तबला दोनों संगत करते है। राग को पूरी बढ़त के बाद सितार एवं वायलिन में सवाल–जवाब हुए और उसके खत्म होते ही घटकम् एवं तबले पर सवाल–जवाब हुए और अंत में सब एक साथ बजकर सम पर आकर रूक जाते है। इस समूह ने फ्यूजन के हर नियम का निर्वाह करते हुए श्रेष्ठ फ्यूजन का निर्माण किया।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय वाद्य तथा पाश्चात्य वाद्यों का फ्यूजन (अवनद्ध एवं तत् वाद्यों का फ्यूजन)

वर्तमान में भारतीय तथा पाश्चात्य संगीत का फ्यूजन, ज्यादा हो रहे हैं इसी का एक उदाहरण निम्नलिखित है–

(उत्तर भारतीय शास्त्रीय वाद्य तथा पाश्चात्य वाद्यों का फ्यूजन (अवनद्ध एवं तत् वाद्यों का फ्यूजन)

''एलबनी (न्यूयॉर्क) में 10 अक्टूबर सन् 2009 को भारतीय तबला वादक ''उस्ताद जाकिर हुसैन'', अमेरिकन बेन्जो वादक ''बेला फ्लेक'', व अमेरिकन ''डबल बॉस (chello play/बॉस गिटार) वादक ने फ्यूजन किया।''[4] तीनों ने अपने–अपने वाद्यों को एक के बाद एक बजाया। फिर एक ही ताल अर्थात् 16 मात्रा को आधा–आधा अर्थात् 8–8 में बांटा व आधे–आधे आवर्तन पर क्रम से बजाया। अन्त में एक दूसरे के वाद्यों से सवाल–जवाब किये गये और अन्त में तीनों ने एक साथ बजाकर सम पर खत्म किया। इस फ्यूजन की विशेषता यह थी कि तीनों ने अपने वाद्यों को अंत तक की शैली में बजाया जिसके लिए वे प्रसिद्ध हैं।

इसी तरह का एक श्रेष्ठ उदाहरण और है– सन् 1980 में विश्व प्रसिद्ध तबला वादक ''जाकिर हुसैन'' व विश्व विख्यात Tata Guines ने तबले व कोंगों पर फ्यूजन किया। तबले पर ''जाकिर हुसैन'' तथा कोंगों

पर Tata Guines" थे। दोनों ने हर फ्यूजन की तरह सवाल–जवाब के बाद सम पर लाकर खत्म कर दिया। पटियाला घराने के उस्ताद जाकिर हुसैन आजकल कई भारतीय एवं पाश्चात्य वाद्यों एवं गायन के साथ फ्यूजन कर रहे है।

दक्षिणी भारतीय लोक वाद्य, दक्षिण भारतीय शास्त्रीय वाद्य एवं पाश्चात्य वाद्यों का फ्यूजन (भारतीय एंव पाश्चात्य अवनद्ध वाद्यों का फ्यूजन)

आजकल फ्यूजन में लोक–वाद्यों को भी शामिल किया जाने लगा है। संगीत के प्राचीन साहित्यों में लोक वाद्यों व रागों का शास्त्रीय साहित्यों में लिये जाने के मत का पूर जोर समर्थन मिला है और वही परम्परा फ्यूजन जैसी विद्या में भी अब अपनाई जाने लगी है। ''ए.आर. रहमान कॉनसर्ट स्। जुगल बंदी कार्यक्रम'' में इसी प्रकार का फ्यूजन देखने को मिला। इस फ्यूजन में दक्षिण भारतीय शास्त्रीय वाद्य मृदंगम् व पाश्चात्य वाद्य ड्रम तथा दक्षिण भारतीय लोक वाद्य ''तविल'' का प्रयोग किया गया।''[5]

(दक्षिणी भारतीय लोक वाद्य, दक्षिण भारतीय शास्त्रीय वाद्य एवं पाश्चात्य वाद्यों का फ्यूजन (भारतीय एंव पाश्चात्य अवनद्ध वाद्यों का फ्यूजन)

''तविल'' अवनद्ध वाद्यों की श्रेणी का वाद्य है। इसकी बनावट ढोल, वाद्य जैसी है और इसको बजाने के तरीके में मृदंक एवं ढोल का मिश्रण है। अर्थात् तविल वाद्य जैसी है और इसको बजाने के तरीके में मृदंग एवं ढ़ोल का मिश्रण है। अर्थात् तविल वाद्य के बाई तरफ बांए हाथ से पखावज की तरह बोल बजाए जाते है तथा दांए हाथ से दांई तरफ की तरह एक छोटी से डण्डी से बजाया जाता है। मुख्यतः यह वाद्य दक्षिण भारत में मंदिरों में भजन के समय एवं समारोह आदि में बजाया जाता है। इस फ्यूजन में ''तविल'' वाद्य को ''अरिद्वार मंगलम् पलनिवेल'' ने, मृदंगम् को ''डी.ए. श्रीनिवासन'' ने तथा ड्रम–वाद्य ''श्री शिव मणी'' ने बजाया।

उत्तर भारतीय शास्त्र वाद्य एंव पाश्चात्य लोक वाद्य

वर्तमान में ऐसे फ्यूजन भी हो रहे हैं जिनमें पाश्चात्य लोक वाद्यों व पाश्चात्य शास्त्रीय वाद्यों को भारतीय वाद्यों में सम्मिलित किया जाता है। ऐसा ही फ्यूजन भारत के ''विद्वान ''तौफीक कुरेशी'' व ''श्रीधर पार्थसार्थी'' ने भी किया है। इस फ्यूजन में ''श्रीधर पार्थसार्थी'' ने तबला व ''तौफीक कुरेशी'' ने पश्चिमी अफ्रीका का लोक वाद्य ''जैम्बे'' बजाया।''[6]

उत्तर भारतीय शास्त्र वाद्य एंव पाश्चात्य लोक वाद्य

पश्चिमी भारत का लोक वाद्य ''जैम्बे'' पर तौफीक कुरेशी ने तबले के बोल बजाकर तबले के साथ फ्यूजन किया। जैम्बे दानों ही अवनद्ध वाद्य की श्रेणी में आते है। ''तौफीक कुरेशी'' ने कई भारतीय व पाश्चात्य वाद्यों को स्वयं बजाकर फ्यूजन किया। इनकी निजी ''अल्टीमेट गुरू म्यूजिक डी.वी.डी. कम्पनी'' है। इस कम्पनी के माध्यम से इन्होने फ्यूजन की कई डी.वी.डी. निकाली है।

भारतीय शास्त्रीय वाद्यों एवं भारतीय लोक वाद्यों का फ्यूजन

उत्तरी भारत में ''लंगा'' व ''मांगनियार'' जाति लोक संगीत के लिए विश्व विख्यात हैं। ''मोहन वीणा वादक ''पं. विश्व मोहन भट्ट'' ने 28 जुलाई 2011 में पुर्तगाल में एक संगीत सम्मेलन में ''लंगा'' एवं ''मांगनियार'' लोक संगीतकारों के साथ ''डेज़र्ट स्लाइड'' के नाम से फ्यूजन किया था।''[7]

भारतीय शास्त्रीय वाद्यों एवं भारतीय लोक वाद्यों का फ्यूजन

इस तरह के कई फ्यूजन के उदाहरण हमें यू ट्यूब पर आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। इन प्रयोगों ने फ्यूजन को एक नई दिशा में मोड़ने का प्रयास किया है। यह मिश्रण कितना आगे बढ़ेगा यह श्रोता और वक्त दोनों मिलकर तय करेंगे।

सन्दर्भ सूची

1. https://www.youtube.com/watch?v=sUJ_7N2xY_U
2. https://www.youtube.com/watch?v=gKE3gDpgd2c
3. http://www.dailymotion.com/video/xzztbw
4. https://www.youtube.com/watch?v=7384ZykXjZc
5. https://www.youtube.com/watch?v=adKI0tg4QJk
6. https://www.youtube.com/watch?v=TwiTqg2FsUQ
7. https://www.youtube.com/watch?v=bU1NXt9Nk6s